UP Board Notes Class 7 Sanskrit chapter 7 प्रहेलिका

शब्दार्था :-दन्तैः हीनः = दाँतों से रहित (बिना दाँत के), शिलाभक्षी = पत्थर खाने वाला निर्जीवः = बेजान, गुणस्यूतिः = सूत (रस्सी) से सिला, समृद्धोऽपि = धनवान होने पर भी, परपादेन – दुसरे के पैर से, उपानह = जूता, शब्दार्थाः-शिखण्डेन = पंख (मयूर पिच्छ) से, विहगः = पक्षी, विहगश्चास्मि = और पक्षी हूँ, साक्षरः = अक्षर सहित, साक्षरोऽस्म्यहम् = मैं साक्षर हूँ, पदैर्विनैव = पैरों के बिना ही, प्रस्तर-तुल्यम् = पत्थर की तरह (कठोर), रेफादौ = प्रारम्भ में रेफ (र)।

दन्तैहनः ..... परपादेन गच्छति ॥1॥

हिन्दी अनुवाद – दाँत नहीं है, फिर भी पत्थर खानेवाला है; निर्जीव है; फिर भी बहुत बोलनेवाला है; सूत से सिला है; धनवान होने पर भी दूसरों के पैरों से चलता है। (जूता)

शोभितोऽस्मिः ..... मे जानाः ॥2॥

हिन्दी अनुवाद – मोर के पंखों से सुसज्जित हूँ; विशाल पंखों से अलंकृत हैं; राष्ट्रीय पक्षी हूँ; लोग मेरा नृत्य देखते हैं। (मोर)

पठितो ..... मुखम् ॥3॥

हिन्दी अनुवाद – मैं जरा भी पढ़ा लिखा नहीं; फिर भी साक्षर (अक्षरवाला) हूँ; पैर नहीं हैं; फिर भी चलता हूँ, और मुँह के बिना ही बोलता हूँ। (पत्र)

क्वचित् ..... जनाः ॥4॥

हिन्दी अनुवाद – कभी मैं पत्थर की तरह हूँ; कभी तरल के समान; कभी आयु की भाँति सूक्ष्म हो जाता हूँ; परन्तु लोग मुझे सदा देखते हैं। (पानी)

रेफादौ ..... जनप्रियः ॥5॥

हिन्दी अनुवाद – प्रारम्भ में रेफ है; अन्त में 'म' है; जिसे वाल्मीकि ने सराहा है; सर्वश्रेष्ठ; कहो, यह लोकप्रिय कौन है? (राम)

https://www.evidyarthi.in/